चतुर्थः पाठः



सदैव पुरतो निधेहि चरणम्

[श्रीधरभास्कर वर्णेकर के द्वारा विरचित प्रस्तुत गीत में चुनौतियों को स्वीकार करते हुए आगे बढ़ने का आह्वान किया गया है। इसके प्रणेता राष्ट्रवादी कवि हैं और इस गीत के द्वारा उन्होंने जागरण तथा कर्मठता का सन्देश दिया है।]

लोट्-विधिलिङ्-प्रयोगः

चल चल पुरतो निधेहि चरणम्। सदैव पुरतो निधेहि चरणम्।।

> गिरिशिखरे ननु निजनिकेतनम्। विनैव यानं नगारोहणम्।। बलं स्वकीयं भवति साधनम्। सदैव पुरतो।।

पथि पाषाणा विषमाः प्रखराः।
हिंस्ताः पशवः परितो घोराः।।
सुदुष्करं खलु यद्यपि गमनम्।
सदैव पुरतो ""।

जहीहि भीतिं भज भज शक्तिम्। विधेहि राष्ट्रे तथाऽनुरक्तिम्।। कुरु कुरु सततं ध्येय-स्मरणम्। सदैव पुरतो।।



पुरतो (पुरत:) आगे निधेहि रखो

गिरिशिखरे पर्वत की चोटी पर

निजनिकेतनम् अपना निवास

विनैव (विना+एव) बिना ही

नगारोहणम् (नग+आरोहणम्) पर्वत पर चढ्ना

स्वकीयम् अपना

पथि मार्ग में

पाषाणाः पत्थर

विषमा: असामान्य

तीक्ष्ण, नुकीले प्रखरा:

हिंसक हिंस्रा:

चारों ओर परितो (परित:)

घोराः भयङ्कर, भयानक

अत्यन्त कठिनतापूर्वक साध्य सुदुष्करम्

जहीहि छोड़ो/छोड़ दो भजो, जपो

भज

विधेहि करो

अनुरक्तिम् प्रेम, स्नेह

सततम् लगातार

ध्येयस्मरणम् उद्देश्य (लक्ष्य) का स्मरण



1. पाठे दत्तं गीतं सस्वरं गायत।

- 2. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि एकपदेन लिखत-
 - (क) स्वकीयं साधनं किं भवति?
 - (ख) पथि के विषमा: प्रखरा:?
 - (ग) सततं किं करणीयम्?
 - (घ) एतस्य गीतस्य रचयिता क:?
 - (ङ) सः कीदृशः कविः मन्यते?
- 3 मञ्जूषातः क्रियापदानि चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत-

निधेहि	विधेहि	जहीहि	देहि	भज	चल	कुरु
						9

यथा-त्वं पुरत: चरणं निधेहि।

- (क) त्वं विद्यालयं।
- (ख) राष्ट्रे अनुरिक्तं।
- (ग) मह्यं जलं।
- (घ) मूढ! धनागमतृष्णाम्।
- (ङ) """ गोविन्दम्।

सदैव पुरतो नेधेहि चरणम्

(च) सततं ध्येयस्मरणं।

4. मञ्जूषातः अव्ययपदानि चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत-

एव खलु तथा परित: पुरत: सदा विना

- (क) विद्यालयस्य एकम् उद्यानम् अस्ति।
- (ख) सत्यम् जयते।
- (ग) किं भवान् स्नानं कृतवान्?
- (घ) सः यथा चिन्तयति """ आचरति।
- (ङ) ग्रामं """ वृक्षाः सन्ति।
- (च) विद्यां """ जीवनं वृथा।
- (ন্ত) """ भगवन्तं भज।
- 5. विलोमपदानि योजयत-

पुरत: विरक्ति:

स्वकीयम् आगमनम्

भीति: पृष्ठत:

अनुरिकतः परकीयम्

गमनम् साहसः

6.	लट्लकारपदेभ्यः लोट्-	विधिलिङ् लका र	पदानां रि	नेर्माणं कुरुत-			
	लट्लकारे	लोट्लकारे		विधिलिङ्लकारे			
	यथा-पठति	पठतु		पठेत्			
	खेलसि	•••••		•••••			
	खादन्ति	•••••		•••••			
	पिबामि	•••••		•••••			
	हसत:	•••••		•••••			
	नयाम:	•••••		•••••			
7.	. अधोलिखितानि पदानि निर्देशानुसारं परिवर्तयत-						
	यथा - गिरिशिखर (स	प्तमी-एकवचने)	- f	गरिशिखरे			
	पथिन् (सप्तमी	-एकवचने)	- "	•••••			
	राष्ट्र (चतुर्थी-ग	एकवचने)	- "	•••••			
	पाषाण (सप्तर्म	-एकवचने)	- "	**************			
	यान (द्वितीया-	बहुवचने)	- ··	•••••			
	शक्ति (प्रथमा-	-एकवचने)	- ··	•••••			
	पशु (सप्तमी-व	बहुवचने)	- **	•••••			
8.	उचितकथनानां समक्षम्	'आम्', अनुचि	तकथनान	गं समक्षं 'न' इति लिखत-			
	यथा-पुरत: चरणं निधेहि	T	आम्				
	(क) निजनिकेतनं गिरिशिखरे अस्ति।						
	(ख) स्वकीयं बलं बाधकं भवति।						
	वैव पुग्तो विह चरणम् 🌦 🏊	2	4	27			

- (ग) पथि हिंस्त्राः पशवः न सन्ति।
- (घ) गमनं सुकरम् अस्ति।
- (ङ) सदैव अग्रे एव चलनीयम्।

9. वाक्यरचनया अर्थभेदं स्पष्टीकुरुत-

परित:

- पुरत**:**

नग:

- नाग:

आरोहणम्

- अवरोहणम्

विषमा:

समा:

योग्यता-विस्तारः

न गच्छति इति नगः। पतन् गच्छतीति पन्नगः।

उरसा गच्छतीति उरगः। वसु धारयतीति वसुधा।

खे (आकाशे) गच्छति इति खग:। सरतीति सर्प:।

डॉ. श्रीधरभास्कर वर्णेकर (1918-2005 ई.) नागपुर विश्वविद्यालय में संस्कृत विभाग के अध्यक्ष थे। उन्होंने संस्कृत भाषा में काव्य, नाटक, गीत इत्यादि विधाओं की अनेक रचनाएँ कीं। तीन खण्डों में संस्कृत-वाङ्मय-कोश का भी उन्होंने सम्पादन किया। उनकी रचनाओं में 'शिवराज्योदयम्' महाकाव्य एवं 'विवेकानन्दविजयम्' नाटक सुप्रसिद्ध हैं।

प्रस्तुत गीत में पज्झटिका छन्द का प्रयोग है। इस छन्द के प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ होती हैं। हिन्दी में इसे चौपाई कहा जाता है।

